Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 5
वीर रस के कवित्त- भूषण

कवि परिचय

रीतिकाल की श्रृंगार प्रधान काव्य-सरिता में वीर रस की प्रबल धार बहाने वाले कवि भूषण का जन्म उत्तर प्रदेश में कानपुर के तिकवापुर गाँव में सन् 1613 ई. में हुआ था। उनके पिता रत्नाकर त्रिपाठी थे। इनका मूल नाम घनश्याम था। इन्हें भूषण की उपाधि रूद्र सिंह सोलंकी द्वारा दी गई थी। इन्हें छत्रपति शिवाजी तथा छत्रसाल महाराज के दरबार में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ।

कवि भूषण की रचनाओं में शिवराज भूषण , छत्रसाल दशक, शिवा बावनी, भूषण हजारा व भूषण उल्लास आदि का उल्लेख किया जाता है उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना शिवराजभूषण है। भूषण की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना , वीरता के उद्गार व ओज गुण का वैशिष्ट्य है। कवि की वाणी देशवासियों के लिए आज भी प्रेरणादायी है। सन् 1715 ई. में भूषण की मृत्यु हो गयी।

वस्तुनिष्ठप्रश्न

प्रश्न 1.'भनत' शब्द का अर्थ है-

(अ) कविता

(ब) कहना

(स) सजना

(द) खनकना

उत्तर: (ब)

प्रश्न 2. कवि किस की भुजाओं पर धरती का भार मानता है-

(अ) कछुए की

(ब) शेषनाग की

(स) शिवाजी की

(द) औरंगजेब की

उत्तर: (स)

अतिलघूत्तरात्मकप्रश्न

प्रश्न 1. भूषण के संकलित छंदों में कौनसा रस और कौनसा गुण है?

उत्तर: भूषण के संकलित छंदों में वीररस है तथा ओजगुण है।

प्रश्न 2. कवि भूषण की दो रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर: कवि भूषण की दो रचनाएँ-***शिवराजभूषण*** तथा '***छत्रसालदशक***' है।

लघूत्तरात्मकप्रश्न

प्रश्न 1. भूषण ने अँधेरे पर किसका अधिकार बताया है?

उत्तर: कविवर भूषण ने शिवाजी महाराज के पराक्रम वीरता और शौर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि अंधेरी पर सूर्य की किरणों का अधिकार है।

प्रश्न 2. सहस्रबाहु पर किसने विजय प्राप्त की थी?

उत्तर: सहस्त्रबाहु ने परशुराम के पिता जमदग्नि के गानों को बलपूर्वक छीन लिया था। परशुराम ने सभी क्षत्रियों का विनाश करना प्रारंभ कर दिया और इसी विजय क्रम में सहस्रबाहु पर भी विजय प्राप्त कर ली

प्रश्न 3. वितुण्ड पर किसका अधिकार होता है?

उत्तर: वितुंड अर्थात हाथी विशालकाय जीव होता है परंतु उसमें स्फूर्ति नहीं होती। अपनी शारीरिक स्फूर्ति के कारण सिंह जंगल का राजा कहलाता है और इसी कारण से वितुंड पर भी सिंह का अधिकार होता है।

निबंधात्मकप्रश्न

प्रश्न 1. पठित अंश के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भूषण वीररस के कवि थे।

उत्तर: कवि भूषण वीर रस के अद्वितीय कवि हैं उन्होंने शिवाजी महाराज तथा छत्रसाल बुंदेला की वीरता का बड़ी ही ओजस्वी वाणी में वर्णन किया है। रीतिकाल के श्रृंगारिक वातावरण में भी उन्होंने वीर रस की सरिता बहायी है। महाराज शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना सजाकर उत्साह में भरे शत्रुओं पर विजय पाने जा रहे हैं। स्पष्ट है कि उत्साह वीर रस का स्थायी भाव है और शिवाजी उस समय वीर रस में ओतप्रोत हैं। नगाड़ों की ध्वनि 'उद्दीपन' बनकर उनके उत्साह को बढ़ा रही है। छंद पाठकों के मन में भी वीर रस का संचार कर रहा है।

कवि शिवाजी की वीरता का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि शिवाजी जब मुगल दरबार में उपस्थित हुए और उनका अपमान किया गया तो उन्होंने निडर होकर उस अपमान के लिए आवाज उठाई और शिवाजी का रूद्र रूप देखकर सभी दरबारियों के चेहरे पीले पड़ गए इसी प्रकार शिवाजी के पराक्रम और शौर्य का वर्णन करते हुए कवि ने उनकी तुलना ईश्वर के कार्यों से की है अजी की वीरता का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि-

"तेज तम अंश पर कान्हा जिमी कंस पर
त्यों मल्लेश बंश पर सेर सिवराज है"

अत: संकलित छंदों से स्वत: सिद्ध हो रहा है कि भूषण वीर रस के कवि थे।

सप्रसंग व्याख्याएँ

(1) साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि,
सरजा सिवाजी जंग जीतने चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदीनद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफल खैलभैल खलक में गैल-गैल,
गजन की तैलपैल सैल उसलत है।

तारा सौ तरनि धूरिधारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

कठिन शब्दार्थ- साजि = सजाकर। चतुरंग सैन = हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सैनिक चार अंगों से युक्त सेना। अंग = शरीर। उमंग = उत्साह। धरि = धारण करके। सरजा = शिवाजी की उपाधि। जंग = युद्ध। भनत = कहते हैं। नाद= शब्द। बिहद = भारी, घोर। नगारन के = युद्ध के नगाड़ों के। नद = विशाल नदी। मद = मत्त हाथी की कनपटी से टपकने वाला द्रव। गैबरन = हाथियों। रलत है = बहते हैं। ऐल फैल = सेना के फैलने या चलने से। खैल-मैल = खलबली, भय। खलक = संसार। गैल-गैल = गली-गली या सभी मार्गों पर। गजन की = हाथियों की वैल-पैल = धक्कों से। सैल = पर्वत। उसलत = उखड़ते। तारा सौ = तारे के समान (छोटा)। तरनि = सूर्य। धूरि-धारा = धूल का उड़ना। जिमि = जैसे। धारा = थाल। पारा = एक द्रव अवस्था में रहने वाली धातु। पारावार = समुद्र। यों हलते है = इस प्रकार हिलता है।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ***'वीर रस के कवित्त'*** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है। इस छंद में कवि, शिवाजी की विशाल सेना के युद्ध के लिए जाते हुए समय का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- कवि भूषण शिवाजी की वीरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना को तैयार कर और अपने अंगों में अत्यधिक उमंग भरकर जब युद्ध को जीतने के लिए चलते हैं, तो उनकी बड़ी ही अनुपम शोभा होती है। युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय उनके नगाड़ों की आवाज चारों ओर गूंजने लगती है। हाथियों की मदधारा बहने से चारों तरफ नदी नाले बहने लगते हैं अर्थात कवि कहता है कि शिवाजी के पास हाथियों की एक विशाल सेना है और वह सब हाथी एक साथ चलते हैं तो उनकी कनपटियों से निकलने वाला पसीने जैसा द्रव्य पदार्थ इतना अधिक होता है कि उनसे कई नदी नाले बहने लगते हैं। शिवाजी की सेना के हाथी, घोड़े, पैदल इत्यादि सब जब एक साथ चलते हैं तो सारे संसार की गली-गली में खलबली मच जाती है। उनकी सेना के हाथी जब एक दूसरे को ठेलते हुए अर्थात धक्का-मुक्की करते हुए चलते हैं तो इससे बड़े-बड़े पर्वत भी उखड़ने लगते हैं। सेना के चलने से चारों तरफ बहुत अधिक धूल उड़ती है। धूल के उड़ने के कारण सूर्य छोटे से तारे के समान लगने लगता है, और समुद्र यूं हिलता हुआ प्रतीत होता है जैसे बड़े से थाल के ऊपर पारा रखा गया हो, और वह पारा हिल हो।

विशेष-

(i) शिवाजी की सेना के रणक्षेत्र के प्रस्थान को दृश्य अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन-शैली में हुआ है।

(ii) भाषा और गुण युक्त है। ***"ऐलफल ..... गैल-गैल"*** में नाद सौन्दर्य है।

(iii) ***"ऐलफल ..... सैल उसलत हैं।"*** में ***अनुप्रास अलंकार***, ***"तारा सौ ..... लगत"*** तथा ***"धरा पर .....यों हलत है।"*** में ***उपमा अलंकार*** है।

(iv) वीर रस का सौंदर्य है।

(2) सबन के ऊपर ठाढ़ी रहिबे के जोग,
ताहि खरो कियौ छह-हजारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धारि मन,
कीन्हों ना सलाम न बचन बोले सियरे।
भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यौ,
सारी पातसाही के उड़ाये गए जियरे।
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भए,
स्याहमुख नौरंग, सिपाह-मुख पियरे।

कठिन शब्दार्थ- ठाड़ो = खड़ी। जोग = योग्य। खरौ = खड़ी। छह हजारने = बादशाह द्वारा दिया जाने वाला एक ओटा पद। नियरे = पास। गैरमिसिल = बराबर न होना, अपमानजनक। गुसीले = क्रोधी। गुसा = गुस्सा, क्रोध। सियरे = नम्र, ठंडे। भनते = कहते हैं। बलधन लाग्यौ = उत्तेजित होने लगी। पातसाही = बादशाहत, दरबारी लोग। उड़ाई गए = उड़ गए। जिअरे = प्राण, होश। तमक = क्रोध, आक्रोश। निरखि = देखकर। स्याह = काला। नौरँग = औरंगजेब। सिपाह = सिपाही, सैनिक। पियरे = पीले॥

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ***'वीर रस के कवित्त'*** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है। कवि ने औरंगजेब द्वारा शिवाजी को उचित सम्मान ने दिए जाने पर, उनके क्रोधित होने और औरंगजेब तथा उसके सैनिकों के हाव-भावों का वर्णन किया

व्याख्या- औरंगजेब द्वारा उचित सम्मान दिए जाने के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब के दरबार में पहुँचे। अपनी वीरता और प्रभाव के कारण जो शिवाजी सबसे ऊपर खड़े होने के योग्य थे, उनको अपमानित करते हुए छह हजारी मनसबदारों के पास खड़ा किया। गया। इसे अत्यन्त अनुचित और अपमानजनक मानते हुए, स्वाभिमानी और क्रोधी शिवाजी के मन में बड़ा रोष छा गया। उन्होंने न तो औरंगजेब को सलाम किया और न नम्र शब्दों में अपना विरोध प्रकट किया। जब अपना अपमान किए जाने से शिवाजी उत्तेजित होने लगे तो उनका क्रोध से लाल मुख तथा रौद्ररूप देख औरंगजेब का मुख तो झेप के मारे काला पड़ गया और इसके सिपाहियों के मुख भय से पीले पड़ गए।

विशेष-

(i) शिवाजी के साहस, वीरता, शौर्य और पराक्रम का सुंदर चित्रण हुआ है।

(ii) औरंगजेब और उसके सिपाहियों के बारे में अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन है।

(iii) उर्दू मिश्रित शब्दावली का प्रयोग हुआ है- 'गैरमिसिल', 'गुस्सा', 'सलाम', 'तमक', 'स्याह' तथा 'सिपाह'

(iv) 'गैरमिसिल', 'गुसीले गुसा' में ***अनुप्रास अलंकार*** तथा "तमक ते ..... मुख पियरे।' में ***अतिशयोक्ति*** अलंकार है।

(3) तेरे हीं भुजानि पर भूतल को भार
कहिबे कौं सेषनाग दिगनाग हिमाचल है।
तेरौ अवतार जग-पोषन-भरनहार,
कछु करतार कौ न तो मधि अमल है।
साहि-तनै सरजा समथ्थ सिवराज कवि
भूषन कहत जीवौ तेरो ही सफल है।
तेरौ करबाल करै म्लेच्छन कौ काल
बिन काज होत काल बदनाम धरातल है।

कठिन शब्दार्थ- भुजानि = हाथों में। भूतल = पृथ्वी। भार = बोझ। शेषनाग = एक सहस्र फन वाले, विशाल सर्प माने जाते हैं, जो धरती को धारण करते हैं। दिगनाग = चारों दिशाओं में धरती को धारण करने वाले हाथी। हिमाचल = हिमालय आदि पर्वत। पोषन-भरनहार = भरण-पोषण करने वाला। करतारे = ईश्वर, विधाता। ती मधि = उसमें। अमल = प्रयत्न, कार्य, अधिकार। साहि= शाह। तनै = पुत्र। सरजा = शिवाजी की उपाधि। समथ्थ = समर्थ, शक्तिशाली। जीवौ = जीना। करेवाल = तलवार। म्लेच्छन कौ = अत्याचारी मुगलों का। काल = अंत, नाश। काज = कारण। धरातल = संसारे।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ***'वीर रस के कवित्त'*** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है।कवि के अनुसार पृथ्वी का भार धारण करना और संसार का भरण-पोषण वास्तव में शिवाजी ही करते हैं। शेषनाग, दिग्गज आदि और ईश्वर का तो केवल नाम ही नाम है।

व्याख्या- कवि भूषण कहते हैं-हे शाह पुत्र सरजा शिवाजी ! इस संसार का भार वास्तव में आप ही उठाए हुए हैं। शेषनाग, दिग्गज (दिशाओं के हाथी) तथा हिमालय आदि पर्वत तो कहने के लिए 'भूधर' हैं। हे शिवाजी ! तुम्हारा अवतार (जन्म) ही सारे जगत की सुरक्षा और पालन-पोषण के लिए हुआ है। इस काम में ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है। हे सर्वसमर्थ शिवाजी महाराज! सच कहें तो आज के राजाओं में आपका ही जीना सार्थक है। हे शिवाजी ! तुम्हारी तलवार ही अत्याचारी मुगलों का अंत करने वाली है। बेचारा काल तो जान लेने के लिए व्यर्थ ही बदनाम चला आ रहा है।

विशेष-

(i) कवि ने शिवाजी महाराज को एक कर्तव्यनिष्ठ शासक सिद्ध किया है।

(ii) परिष्कृत, ओजपूर्ण और साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(iii) शैली ओजगुण और वीररस सेपरिपूर्ण है।

(iv) ***"साहि-तनै सरजा, समथ्थ सिवराज"*** में अनुप्रास अलंकार है।

(v) शिवाजी के शौर्य और कर्तव्यनिष्ठा का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

(4) इंद्र जिम जंभ पर, बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन वारिवाह पर, संभुतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर राम् द्विजराज है।
दावा दुमदंड पर चीता मृगझुंड पर,
भूषन वितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर
यौं मलेच्छ-बंस पर, सेर सिवराज है।

कठिन शब्दार्थ- जिमि = जैसे। जंभ = जुंभासुर नाम का दैत्य जिसका वध इंद्र ने किया था। बाड़व = वड़वानल, समुद्र में रहने वाली आग जो जल को जलाया करती है। अंभ = जल। सदंभ = अहंकारी। रघुकुलराज = राम्। पौन = पवन। वारिवाह = बादल। संभु = शिव। रतिनाह = कामदेव। सहस्रबाहु = एक पौराणिक राजा। राम = परशुराम। द्विजराज = ब्राह्मणों में श्रेष्ठ। दावा = दावानल, जंगल में लगने वाली आग। द्रुम दंड = वृक्ष। मृगझुंड = हरिणों का समूह। वितुंड = हाथी। मृगराज = सिंह। सेर = शेर, हाबी, आतंकित करने वाला।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ***'वीर रस के कवित्त'*** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है।कवि अनेक उदाहरणों द्वारा अन्यायी मुगल शासकों पर शिवाजी के आतंक का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- कवि भूषण कहते हैं-जिस प्रकार देवताओंके राजा इन्द्र का जम्भासुर पर आधिपत्य प्रसिद्ध है। जल को भी जला देने वाली बड़वाग्नि (समुद्र में लगने वाली आग) से जैसे जल भयभीत रहता है, अहंकारी रावण पर भगवान राम का आधिपत्य सर्वज्ञात है, पवन का बादल पर, शिवजी का रति के पति कामदेव पर, राजा सहस्रबाहु पर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुराम का, वृक्षों पर दावानल (जंगल में लगने वाली आग) का, चीते का हरिणों के समूह पर, हाथियों पर सिंह का, प्रकाश का अंधकार पर, भगवान कृष्ण का कंस पर जिस प्रकार आधिपत्य प्रसिद्ध है, उसी प्रकार संपूर्ण अत्याचारी मुगल शासकों पर शिवाजी महाराज का आतंक छाया हुआ है।

विशेष-

(i) शिवाजी की वीरता का वर्णन करने के लिए पौराणिक कथानकों का सहारा लिया गया है।
(ii) शिवाजी महाराज के पराक्रम का कवि ने ओज पूर्ण भाषा-शैली में वर्णन किया है।
(iii) शिवा जी की वीरता का वर्णन करने के लिए अनेक उपमाएँ दी गई है अतः यहां मालोपमा अलंकार का सफल प्रयोग हुआ है।
(iv) शैली अलंकारिक और ओज गुण से युक्त अतिशयोक्ति पूर्ण है।
(v) छंद-वीर रस की अनुभूति कराने वाला है।

(5) गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर,
दावा नागजूह पर सिंह सिरताज को।
दावा पुरहूत को पहारन के कूल पर,
दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।
भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में,
तम पर दावा रविकिरनसमाज को।
पूरब, पछाँह देस, दच्छिन ते उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।

कठिन शब्दार्थ- गरुड़ = भगवान विष्णु का वाहन जो सर्पो का शत्रु माना गया है नाग = सर्प। नागजूह = हाथियों का समूह। सरताज = संबसे अधिक शक्तिशाली। पुरहूत = इंद्र। कुल = समूह वंश। पच्छिन के = पक्षियों के। गोल = समूह। बाज = एक शिकारी पक्षी। अखंड = संपूर्ण। नवखंड = नौ खंडों या भागों वाली। महिमंडल = पृथ्वी। तम = अंधकार। रविकिरन समाज = सूर्य की किरणों का समूह। पछाँह = पश्चिम दिशा। पातसाही = बादशाहत, औरंगजेब का शासन। सिवराज = शिवाजी महाराज॥

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ***'वीर रस के कवित्त'*** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता वीर रस के प्रतिनिधि कवि भूषण है। छंद में कवि ने अपने आश्रयदाता और काव्य-नायक महाराजा शिवाजी के प्रताप और दबदबे का उदाहरण सहित वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि भूषण कहते हैं कि जिस प्रकार सर्पों के परम शत्रु गरुड़ का प्रभुत्व सर्पोंपर है। शेरों का प्रभुत्व हाथियों के झुंड पर है। इंद्रदेव का संपूर्ण पर्वतों पर आधिपत्य है, सभी पक्षियों पर जैसे बाज का आतंक बना रहता है और नौ खंडों वाली सम्पूर्ण पृथ्वी पर जैसे सूर्य की किरणों के प्रकाश का अंधकार पर आधिपत्य है। उसी प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं में जहाँ भी बादशाह औरंगजेब के अधीन शासकों का शासन है, वहाँ पर महाराज शिवाजी का आतंक छाया रहता है।

विशेष-

(i) कवि ने शिवाजी महाराज के प्रताप, शौर्य और पराक्रम का ओजपूर्ण भाषा-शैली में वर्णन किया है।
(ii) "अखंड, नवखंड, महिमंडल में" ***अनुप्रास***

अलंकार है। मालोपमा तथा उदाहरण का भी सुंदर प्रयोग है।

(iii) भाषा प्रसंगानुकूल और भावानुकूल है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg